

## लेखक परिचय

यत्न न स्यात् मधुगाना का रचना क साध  
न स मन् १६ । म प्रकाशित न थी । तब तीन  
रथ पूर नका कविताशा का प्रथम मन्तर तराहार  
प्रकाशित न्या १ । तब समय ना काय प्रमिया का  
यान नगा धार साहृष्ट न्या था मधुगाना न  
न न वाचप्रिय रना न्या ।

अविनाशाय दत्तवान् वा जम ७ नवम्बर  
 का प्रयाग म दूमा रा । तत्रा शिक्षा म्युनि  
 लिपि म्युनि राधमर पाठ्याता मयनमट वावज  
 नागसा यनिर्वागता तथा वागा विवविशानय म  
 । १८८१ म । तत्र उ क्तायाता यनिवमिता  
 म अग्रता व नववर्ग २२ । १९८ म ५६  
 तत्र मय म क्तायाता यनिवमिता स  
 वा मय टा वा क्तायाता यनिवमिता । विवग स तीव्रर  
 २ । तत्र वय अग्रत पुत्र पत्र पर तथा कु मय  
 मय मयता क्तायाता म वाय मिया । तिसम्बर  
 १ । म मय मयता न मय मयता मयताय  
 व म । विवग व मय मयता मिया जय दम  
 वय मयता मयता वा मयताय मयताय  
 मयताय मयताय मयताय मयताय मयताय  
 मयताय मयताय मयताय मयताय मयताय

वाचन का श्रवण है कि म वाचन का समस्त  
 ५ । श्रवण का श्रवण का विषय मानना = श्रवण  
 मग धन कि म वाचन और वाचन म मरण ना  
 मर्त्तिवित है । । मर्त्तिवितान्तर एत न न्तक पूर  
 कर्त्तव्य श्रवण का श्रवण श्रवण म वाचन श्रवण है

૩૫૩ ૨૧ થી ૩૦ મરજી બચાવવા ૧૨૨  
 ૩૫૩ ૨૧ થી ૩૦ નોંધ બે ; મારે નીકળે  
 ૩૫૩ ૩૬ થી ૪૦ નીકળે ને મુખે ૨૧ ને—  
 ૩૫૩ ૪૦ થી ૪૫ મરજી બચાવવા ૧૨૨









राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

बच्चन

कदती  
प्रतिमाओं  
की  
आवाज़

मूय जाठ रपय

© हग्विगगप वचन १६ ८

पहता मग्गण अक्कुर १६ ८

---

KATATI PRATIMAON KI AWAZ by E hchz  
P etry 8-0

समर्पित

स्वर्गोप राजरमल चौधरी की स्मृति में





## अपने पाठको से

मदता प्रतिमात्रा का आवाज व नाम से अपनी स्पष्ट कवितायाँ व नवीनतम मण्ड आपसे हाथ में रख रहा हूँ—रचना-यात्रा में मरी मन स्थिति मन स्थिति मात्र क्या मेरे सपूत यत्किंचिद व विराम ह्लास-परिवर्तन का संकेत है।

य कविताएँ सन् १९६७-६८ में लिखी गई हैं—यानी मेरे जावा के छठ दशक के अन्तिम और शान्त से शांत के प्रथम दौर में। इसकी याद दिलाने के लिए कविताओं के शीर्षकों में लिखा है—इन्हीं प्रति किमा प्रकार के कथाविवरण सम्मान की प्रशंसा करने अवकाश देता किमो नई विविधता का और सज्जन करने की मना विस्तृत नर है। रचना के बान—जिगम दग का गारा परिवर्तना सम्मिलित है—मात्रा मात्रा का निजा संवत्सरान् चरना में परिमाणित और विविधता कृत—आर रचयिता का वष और वष प्राप्त अनुभव का प्रभाव जहाँ रचना पर पड़ता अनिवार्य है वगैरह व किमा फारमूत में प्रभाव का वर्गीकरण कर देता यदि जगत्तर नया तो कविता अन्तर्गत है। प्रतिभा की बात में नया कहना—वर्तमान मंडल रति मात्र नाति नियम पर—चाहें व उदय हा बनाया क्या न हो—हव चना नया है—माधुर्य मात्र भी कविता का नाम व नाम और इना का दाया करन के अधिकार व ता गाय हा आप मुझे बचित करना चाहें वान के फारमूत के स्तिन्न परिणामा में कुछ भिन्न करने की शक्ती गगना है—अन गज व उदय विना मवृत्त नया है वर दूतरा बात है और यहाँ आपका शिष्य बरगा भरा नया। मैं भी मेरे सगवय रचना का रचना परिवर्तन अपना जगह है रचनाकार का वष और वषोत्सव अन्तर्गत नया है और रचना का दाया में गवत्त शक्ति भा अन्तर्गत का वर शिष्य व मकता है वर रचना स्थान बना मरता है। मैं चाहूँगा कि मेरा शिष्य—आप भी मण्ड का कवितायाँ का देंगे। मण्ड में व प्रभुतामर होती है।

मह मरे बतान स अधिक आपक अनुभव की बात होगी कि जीवन आज बनी तजा स बल रहा है और बचने के प्रथम टूटना विस्तार विगटा बाना— सब कुछ गामिन है। इसका प्रभाव सरस अधिक और सबस पहन चित्तक और भावन जयव चि त्त भावन या भावन चित्तक वग पर परिणामत साहित्य और विगपकर कविता पर पन्ना स्याभाविक है। कविता आज भा य और स्वीकृत रूपा का छात्रक युग नीरन के अनुरूप नए स्वरूप नए स्वभावा का छाज म है। यह परिस्थिति जहा काय प्रतिभा के विग बनी भारी चुनौती ह बहा बग अनुकूल जगमर भी है—पुरान तथ्या के मनेव के डर और नए उभरत यथार्थ के अवार स सजन-सत्त्वा का नुटा चन नन और एन अभिनव सन्धि का भारार करन के और यन्ि पनी परिगभग दृष्टि प्राप्त हा सब ता युग जीवन के विकास और उत्थान के विग अनतिम रूप स ही सनी नए मूल्या जयवा नए जाणा कम से कम नए नथ्या नइ राहा को निम्पित जयवा निश्चिन करन का भी। समय मापक रहन हुए समयातीन बनना उ चकाटि के सजन का निरूप भी ह विगपाधिकार भी। किसी भापा जयवा साहित्य के जातरिक बन का परीक्षा एग हा समय हानी है। बन् स यन् सकट का घन्िषा म क्या उसक नयन और कनि जात्य विगमम के माय बह मका है? — जा भाव निधन बगहा एक रास्ता जय भी है। (आरती और जगारे)

जा जहो एक जार तपन का मयव बन् गया है बन् दूसरी जार पाठन का परराज भा बन् गन् है। कवि ता कविता की मत्ता बचा नन — अपनी सत्ता बचा नन के उसक सन्ध का पित्रहान भन जाण—उम पुनम्यापित बरन और गुर ति रपने के जगजह म गगा ह और पात्र है कि फिर स तातना चाहता है पूठना है कि कविता क्या ह? एमी सन्धता जार सन्धो का पन् म उस सत्ता का मन्ध का फरमत है कि कविता बन् जिम कवि कविता बन्धर द तिस पात्र कविता समभकर न और समय जिन कविता मिद्ध कर — बवन राम कानान मन्ध्व जयवारियन का भन ग हा साहित्य का न। हाता। और समय के उपकरण म ह उत्तम मुधजन ( जा प्रधधुधुनति आन्ध्र साधम बाधि वातववि करण ) मध्यम ममानाचर गण ( जा मयन गुन मन्धि पय परि हिन थारि गिनार ) नाच जयगा के जय म सन्ध भागा के जय म नन्ध जया पय वग ( जा पात्रयकम म नग जान पर विगा भा हनि म मय प्रजार के परी ।। पयाना गुन गात्र विगानन के जयवा नन गा के गय नन के ) — १३ और सन्ध परिणम अनिष्टका । भा के कि सन्धयन् बुज्जन जार ममानाचर गण के अभाव का हनि सन्ध मन्धायन वग म का गय के गय ना सन्ध है और नय

जा जिमा वस्तु का समाधि पुरा बहन के कपानि व अच्छी है। किसी अच्छा वस्तु में निरंतर चि जगण रान व निग व किन्ता बला याग ने हैं इस व स्थ नहा जानन —कपानि वान का निगम ता बहुत मज आर वही पुग्मन स हाता है—निग्वानि जा व ठहरा—गा नत्र हाता है नत्र मव का मु व हा जाना है —दया व निग बाबा तुनमागम न कहा या बाक कहहि वनवठ बठोरा । वनर का वगार व नहवर वान उमका विना विनापन वगन है विनता चि । और जन म गा वीकिरण व श्रम म नपुनर या नघनम नहा वन्कि भग त्ति म सर्वोपरि व अमुगर साग्राग किन्तु र्गच ता ता गम्मार विहान नहा भावा पात्र जा अपना विमा आनरि माग का पूर्ति व निग वगार वविता व पाग पचन अयवा वविता का अपन निग्न तान रान ह और रम प्रकार वविता और जावन व अपरिहाय अनिवाय मरघ का पुष्टि करत रान ह । गमय व उगरण ममय न अपना वाम वगे हा । तात्कानि मन्त्र रम वान का है नि जिम में वविता कहन र रान ह म आप वविता ममयकर ल रह है या नहा ? र्गि मुक्ता पखितन श्रियता नरा मुक्ता उगार हृदयता और मवन्तानता — अय व ता नरा गिरा व प्रति भा —मैन पाया है साधारण पाठक व सज गुण हैं । नरा सत्या पात्र भा मरा रचना वविता गमयकर श्रम न की पाए ता में अपना नगता का टटावना चा गा । मैं अपन पात्रा व पाय न हा सकूता मैं य मावन को वि मावन नरा वगा रि व पाछ छग गण ह । यिनि दूमरा भा हा गवता है । जावन का र्गि वता और गान्धिय स प्राय नत्र हुता ह ।

ता ग प्रगुन सत्य व नाम व सत्य म । मैन रम वता प्रतिभाता की जागड रहा है कपानि नरा वविता निवन हुए बारबार भरा ध्यान उम रिग्न विपन्न और रिग्न व आर गया है ता जान र्गार चाह आर बार न अग्रि भातर पन रान है । पर र विपन्न और विग्न व वाच कहा वु विनिमित भो ता रान है । मैं गमता, इगत भा जाभाम मुग ह आर भग मन्न व पाय विता अग म य प्रतिधनित भा हता है । मुग प्रानता है रि वटना प्रतिभाता म वनता प्रतिभाता का धनि ना मिनि । एव बार मैन एक गन्तगा म पूछा या क्या व रान ? उगार या वमन का रहा है । दून जयसा वनन जिमा अय म प्रतिमाण वता है ता जागड ता है और दया जगड यदि रसागर व हृदय-मन्त्रि म प्रतिधनित ह ता गूत्रता मुक्ता पगता रम मन्न व निग बाध्यता करता है । दून या जागडा व बात वता वा गगता पा भा अय भाष को र्गानेग उभा आर उगगा व लय पाव कर रान ।

विघटन और सजन —नाम के प्रति यों कचिन सजग रहने की मन स्थिति में जा कुछ लिखा गया उस सग्रह रूप में प्रस्तुत करने की बात सामने आई तो मन में यह विचार भी उठा कि विघटन परक और सजन परक कविताओं का अलग-अलग उद्देश्य सग्रह में दिया जाए और चूँकि कटन तथा टटन-बनन दोनों का बोध होता है इसलिए ज्यादा अच्छा है एक ही नाम के सग्रह के दो सभा में। परन्तु दृष्टि से कविताओं का अलग-अलग असंभव सिद्ध हुआ—बहुत-सी कविताएँ दोनों के लिए चलती तो बहुत-सी दोनों से उठाती रहती। एक बार ऐसा दुष्प्रयास मैं पहले भी कर चुका था और बहुत सफल नहीं हुआ था। किसी के लिए भी यह कहना मैं क्या बगता था कि फना कविता पहले की दूसरे और दूसरे की पहले खंड में होना चाहिए थी। सजन विघटन से तो सफाई से अलग-अलग हो रहा है न समान रूप में न और न आग-अनग समान पृष्ठों में उनकी अभिव्यक्ति हो रही है फिर भी दोनों सभा का प्रस्तुतकरण की दृष्टि से लगभग बराबर हो रखना उचित होता। साधारण दोनों सभा को समान रखना कृत्रिम भी होता अवास्तविक भी। फना कविता में कृत्रिमता स्वाभाविक है पर मैं स्वाभाविकता के अधिक में अधिक निरुद्ध रहने का प्रयास करता हूँ। आप ऐसा ही समझें कि चूँकि सत्य में कविताएँ अधिक या कम लिए उद्देश्य दोषों में प्रकाशित किया जा रहा है गुण की दृष्टि से उन्हें पहले या दूसरे खंड में नहीं रखा गया। प्रथम सगण में बसल सजगान का प्रयत्न किया गया है कि एक के बाद दूसरी कविता और पद्य के बाद दूसरे खंड का ज्ञान समय आप किसी अनुविभाजन के अनुसार का अनुभव न करें और आपका मन के चरण उबल पावड़ धरातल पर न पड़े। कविता और कविता के बीच सुविधा जनक स्थिति का अपना कल्पना से भरने का प्रयोग प्रत्यक्ष सचत पात्र से का जाता है। दोनों सभा के प्रकाशन में समय का कुछ अनराज रख दिया गया है। जब तक आप पहले सजग कविताओं में रम कर हाथ दूसरा खंड भी आपका सामने आ जाएगा। मेरा विश्वास है कि जितने में जा निगम मैंने किया है वह मेरे पाठकों का उचित प्रभाव होगा। आप दोनों खंडों का स्वतंत्र सगण भी समझें तो कायास्वात्तन की दृष्टि में काया बाधा नहीं उपस्थित होगी और मुझे श्रम आपत्ति भी क्या हो सकती है। किन्तु जबकि विचार में किसी एक कविताएँ फना और कविता के तत्कालीन अवस्था का एक छाप विचार जाता है। सगण जाभास संभवतः आपका सजग दोनों खंडों का रचनाओं पर होगा यहाँ उनका एक ही और सग्रह का सूत्र है। वन केवल विचार का सुविधा का ध्यान में रखकर दूसरे सजग का एक अलग नाम ही दिया जा रहा है—उभरते प्रतिमानों के रूप विमला साथ-साथ जायम जायम छिपा न रहता।

मृत्यु कविताओं का संग्रह में प्रथम लघुगीता का नाम मिलेगा। एक  
 तरफ से अपने आप में यह एक कविता है। दूसरी है कि पाँचों बराबर  
 नहीं हैं। दो कविताएँ भी मानने से तो एक कविता दूसरी कविता का अर्थ  
 अच्छा या एक कविता और दूसरी कविता का अर्थ बुरा इन का ज्ञान ही  
 स्वाभाविक है। कारणों का तत्त्वज्ञान में यही न जानता। पाँचों का व्यक्तिगत  
 धारणाओं में अनेक विविधता की कक्षा गुणादिक है। फिर उदाहरणों में  
 कविताएँ सामान्य हैं वही प्रथम आचार्य का कविता का अनुमान सहज ही  
 लगाया जा सकता है—प्रथम स्तर का उदाहरण जाना किना अथवा किना प्रत्यक्ष  
 या मृदु मृदुता में अनेक रचनाओं का एक अर्थ कविता में एक अर्थ पर अर्थ  
 भी अर्थ रत्न रूप कि एक अर्थ न जान पाए पाठक का चाहित कि  
 पर अर्थ द्वार दानद्वारा रचना में पूर्व मानविक तथ्याओं का अर्थ अथवा  
 अर्थ गभावाका अधिक अर्थ या प्रभाव बनाने का अर्थ न बाद तर  
 करने रचना रत्न दान का विद्यामन्त्र न कि विद्या रत्न का रचना  
 का। सब कविताओं पर विचार करने से तो सब का प्रथम ही कुछ ही अर्थ  
 है। यथार्थ जाने ध्यान में रखा गइ है। फिर भी मृत्यु कविताओं का संग्रह  
 विषय में अनेक प्रभाव का कारण तत्त्वज्ञान बना बना अर्थ न है। पर यह अर्थ  
 ही तो पाठक का है। ऐसा किसी कविता का अर्थ न जानने का उदाहरण उदा  
 रणियों में जाना पाएगा जहाँ पद्यों का उदाहरण का उदाहरण अर्थ न  
 भी बाहिर है कि कविताओं में अर्थ न जानने का अर्थ न है। एक उदाहरण अर्थ न  
 अर्थ न है। प्रथम उदाहरण है कि कुछ कविताएँ अर्थ न आणना है। प्रथम अर्थ न  
 अर्थ का उदाहरण है कि उदाहरणों में अर्थ न जानने का अर्थ न है कि  
 मुम्बई या सब अर्थ न जानने का अर्थ न जानने है। मैं अर्थ न जानने का अर्थ न  
 में अर्थ न आणने का अर्थ न है। मैं अर्थ न जानने अर्थ न और अर्थ न-मुम्बई  
 न जानने का अर्थ न है। अर्थ न जानने का अर्थ न जानने का अर्थ न जानने  
 ही उदाहरण अर्थ न जानने का अर्थ न जानने का अर्थ न जानने का अर्थ न  
 जानने जानने का अर्थ न जानने है। अर्थ न जानने है अर्थ न जानने का अर्थ न  
 भी जानने अर्थ न और अर्थ न जानने का अर्थ न जानने है। अर्थ न जानने  
 जानने अर्थ न कि अर्थ न रचना अर्थ न जानने का अर्थ न है—अर्थ न जानने  
 का अर्थ न जानने है कि अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न  
 में अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने  
 का अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने  
 का अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने अर्थ न जानने

ਸੀ ਮਾਧਾ ਸੀ ਬਾਮਨਾ ਧੀਰ ਹਿਮਮ ਨਿਰਾਤਾ ॥ ਅਰਾ ਅਨਗਿਰ ਅਸਿ ਮ ਸੁਖ

जितना कि राम है उसमें अधिक कि बात मुझ उसी सजन क्षमता में है जो यह भाषा बानन और उसमें निगल है। मैं पुराना प्रतिमाजा के टूटने से नहीं घबराता। "टूटने से काँ बका भा नहीं सकता — ताता समाहनमिह प्रवत्त — पर नई प्रतिमाजा का उभग्न से काई रात भा नहीं सकता। नई प्रतिमाएँ निश्चय न गन्ना हागी माय में खन्ना राग नए प्रतिमान पायन् फिर कभी टूटने फिर बनने के लिए। विघटन का अनिवाय प्रतिया के साथ सजन का अपरिहाय सन्निधता भी अनवरत चरगा। विघटन मुत्तर घटिया में हम इस विश्वास का दुःख से पराग्य। मप्राण जानिया और भाषाएँ भी निर्भीकता से सत्कार का सहारती और मान्य के साथ निमाण करता हैं। सहार निमाण की घटियों के तुमुन निनाम म एर स्वर मरा भी— "मस जगि मुझ कुछ नहीं बहना ८।

जय जाय मैं और मरा कविताएँ २।

सजन में जान पर मरा अनुभूतिया से जा सह अनुभूतिया आपका तात्ना है उनका उत्प्राधन कर सकता ता मरी कविताएँ खन्ना करेंगे। जा कविताएँ पायन् से कुछ न सजन का क्षमता नी रखता व उस कुछ देने में भा जममय रहती है।

उस मप्रह के जमया उसका जिमा रचना जयका विहा रचनाआ के सवध में जाय अपना प्रतिक्रिया यकन करना चाहता ता सुनने का मुझ हमारा उत्सुन पाएंगे।

१ विलिखन क्रिम

—बचन

नन्ना क्रिमा ११

२५ अगस्त १९८८

## सूची

|    |                 |    |
|----|-----------------|----|
| १  | निवाजनि         | १६ |
| २  | नानिनि जाण वनि  | २१ |
|    | —टी प्रणिना     | ३  |
| ६  | चचा             | ४  |
| ५  | ना रूप ना मार   | २४ |
| ६  | परिसर निपाज्ज   | २५ |
| ७  | प्रायज्जि       | २७ |
| ८  | दण्ड वा मण्डा   | २८ |
| ९  | ना गण           | २९ |
| १० | ना मोगमा म      | ३० |
| ११ | आर वा मरण       | ३१ |
| १२ | निपमाज्जि       | ३२ |
| १३ | नताज            |    |
| १४ | ना वन           | ६  |
| १५ | जण वा मुगमान    | ७  |
| १६ | वनिता आर वनिता  | ८  |
| १७ | दुग्गा वा मण्डा | ९  |
| १८ | पमाज            | ६० |
| १९ | मुगले           | ६१ |
| २० | जाणत मण्डा      | ६२ |



|    |                |     |
|----|----------------|-----|
| ८५ | नष्ट और नष्ट   | १४५ |
| ८७ | नादू का खिन्का | १४७ |
| ८८ | गुनिया         | १४८ |
| ८९ | वन्-यन् से अगड | १४९ |
| ९० | मानियादि       | १५० |
| ९१ | मन्दादिपुरम    | १५१ |
|    |                | १५३ |

फटती  
प्रतिमाओं  
की आवाज़



## तिलाजलि

काग यह बुझरसर न आता  
वि मुझम  
(जा मैं तर पिता की उम्र का हूँ)  
तिलाजलि तू पाता ।

तू बन राजरामन  
बन व आया था  
आज वनम बिम्फा  
बन व गया  
तून बहुत कुछ  
भागा त्रिपा त्रिया नया ।

पर स तो  
हर पत्र उल्टा है  
तून पर का भा  
उगात का प्रयास रिया  
जब स ।  
पर स बहुत कुछ  
भा गया ।

तू जा त्रिया  
जा भाग

वन् काँ भी जा सवता है  
काँ भा गवता है भाग  
पर तू न तत्स्य नार अपन को दया  
(ता जिन्ना व एक निस का ही देता) —  
यन् था तरा  
साहित्यर याग ।

तू धमकतु व समान जाया  
और न्मारा घरता का  
व्यारता चना गया ।  
न्स जमान म  
कोई किसी की जवान वस धामे  
वन्ना न पयता वसा—  
चटा था ।

वन्ना न मिता है  
उनकी न म  
यन् ता जय तू चना गया  
तय हमन न्मा  
नि न्मार घर म  
तिनता रन् था

## दागनिक और कवि

दागनिक हा  
मुझ पर मानता है  
कि पत्र का न रखा  
उस पर भा न जाया  
वगैरा वगैरा म गया ।

कवि हा  
मुझ पर मानता है  
कि पत्र का पाम हा न जाया  
वगैरा रखा हा नग  
उस पर म भा मना गया ।

## उल्टी प्रक्रिया

देव मानकर  
हम अपने अग्रजा पूजजा का  
पूजन करते रहे  
और तब बोन बनते गए  
बन गए ।

आओ हम प्रक्रिया का उल्टा दें  
जपन अग्रजा पूजजा को बौना बनाकर  
उनकी अच्छी पूजा करें  
और तब वाचनगजा बनें ।

## घवा

घवा घवा घवा

घवा म अर कुछ नया घवा

गर हूँ मराम हैं

घवा व गताम हैं ।



## दो रूप दो सलूक

जा पिता जा !

आपका मरा नमस्कार बारबार

जहाँ तक आप जनक हैं

पादक पापक शिक्षक प्रगति के प्रेरक हैं

(बड़ा मज़ है कि आप कुछ और भी हैं)

जहाँ आप

सड़ी गरी मरिया के प्रतिनिधि हैं

प्रतिगामी पागापयिया व ठकदार

(और कुछ और भी जा मुचस न कहता ए)

वहाँ आपका मरा ठाकरे

एक नौ तान चार !

## परिवार नियोजन

आवाणी यह गइ न

घरना चाहिए

मन जानन है

पर जराया का रस न पना करना चाहिए

मम मम गुण का पश्यन मानन है ।

नय न आण

पुस्तक हउ रह

नुनिया की बुनिया—

गाना-गाना मनी—

कीगना गीतना गानागना चना जग

मा यह जगज गग

कि नुनिया रस क्या—

दुर्वनियो रने मन क

मुक्क मिर उगाग गाना पनाग

बच उगागन-गग

गना-गना का मुखाग नरा गगग

नरा गग ।

गगगग गग निम क्या न गगग

गि गग गग गगगग गग गगगग

और अग गग है

थुके ह चुचक है  
 जा बूत-सडनूम है  
 नामूस दकियानूस है  
 बकार बकबामा बमतनब ज़ावी है  
 हर न वान ब नपसक विराधा है  
 भारत सरकार ऐसा विधयक क्या न पास कराए  
 कि ब सब— पचाम ब ऊपर—  
 एक त्ति  
 अफीम की पुडिया खाए और सा जाए ।  
 और हा फिर न उठे जम्हाए ।

## प्रायश्चित्त

मगध्वी और पत्र  
छत पर म गुत्ता-गुत्ताकर बना है  
ति लो का आकाश बना है  
ता गुत्ता-गुत्ता नही है ।

पर कुत्त उतरा  
गुत्ता-गुत्ता समस्त है ।  
(क्या ?  
अनुमान व भा बना करता है ।)  
गा उतरा विना  
प्रायश्चित्त करने जान भा बना नही है ।

## गानों का मरोपा

कवि जा मन्त्रगण  
गानों का मरोपा उवागिण  
गान म तिरागिण  
मर ॐ मा आप  
जाप क्या समयन ॐ  
जाप हा वण्डन का माप ॐ  
मरोपा आपका किमा म छाया भा हा मक्ता ह  
स्मान जापका किमा म मा उवा नन् ।

## दो नग

पूछा न  
तुम एक माय  
तग नगन ह  
क्या मरा पात न ?

मरा यग पाता ह  
हि वग मरा मर हडाना है  
मैं एक मर हडाना ह ।

## दो मौसमों में

खस की टट्टियाँ  
गरमा म  
भिगार जाती है  
गरम हवा का छान छान ठण्ठी करती हैं  
सुगंधित बनाती हैं ।

खस की टट्टियाँ  
बरसात म  
भागती है  
सज्जी हैं  
बहू फ जाती हैं ।

## आज का स्वस्थ

गुस्सारे गंगा का  
न बुझार न गरमा  
न काँट फूटता बामांग  
न झिझकिया न झिझकी  
न आँसू  
न जलन महकता की बगमों  
न पाँचपाँच  
न ओपलान  
ता तिर आँसू दुखना ब ३  
बैन म नगा ?  
बसति आज जा भा दुखना है  
बामा ३  
और जा बामा नग है  
य नसरार है । मुआ है ।  
बामा का नगा है  
मकराग और और मकराग है ।



## दो मौसमों में

खस की टट्टियाँ  
गरमा म  
भिगाई जाती हैं  
गरम हवा का छान छान ठण्डा करती हैं  
सुगंधित बनाने हैं ।

खस का टट्टियाँ  
बरसात म  
भीगना है  
सन्ता है  
बनू प जाती हैं ।